ISSN : 2278-1773
UGC Care List No. 98

सम्मेलन पत्रिका

शोध-त्रैमासिक

भाग-१०८, संख्या-३

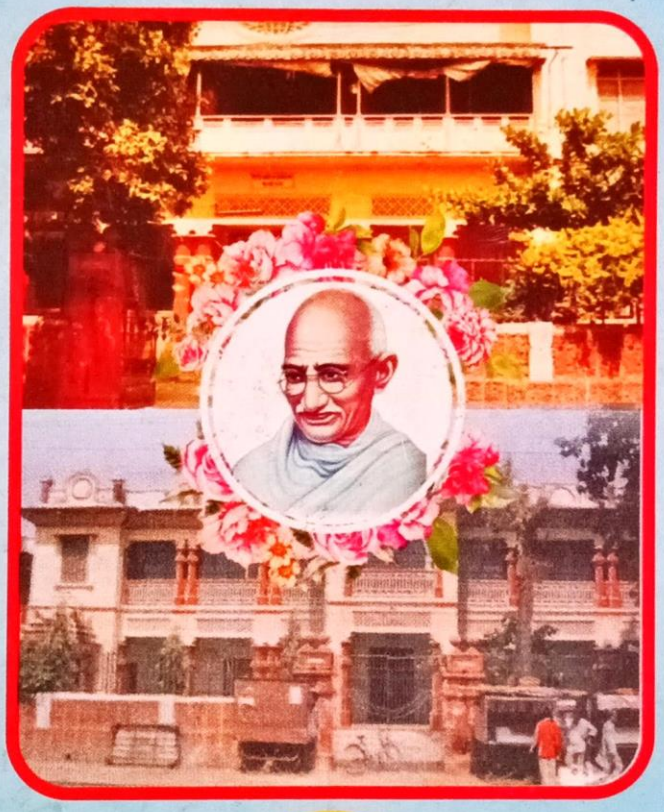

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
१२, सम्मेलन मार्ग, प्रयागराज-२११००३
वेबसाइड : http://hindisahityasammelan.org.
ई-मेल : hs.sammelan.alld@gmail.com

विषय-सूची

सम्पादकीय

क्र.सं.	आलेख	लेखक	पृष्ठ
	आलेख		
१.	उत्तरप्रदेश की श्रीकृष्णलीला सन्दर्भ : "रासलीला"	–डॉ० सविता कुमारी श्रीवास्तव	७-१२
२.	शरद जोशी के व्यंग्य साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक विसंगतियाँ	–डॉ० अजय कुमार	१३-१९
३.	हिन्दी के प्रारम्भिक उपन्यास और आलोचकीय दृष्टि	–डॉ० प्रदीप कुमार सिंह	२०-२५
४.	गोबिन्द प्रसाद : सौन्दर्य, प्रेम और वेदना के कवि	–डॉ० चन्द्रकान्त सिंह	२६-३७
५.	शीतांशु भारद्वाज के उपन्यास साहित्य में ग्रामीण समाज एवं संस्कृति	–डॉ० बन्दना चन्द	३८-४५
६.	प्रेमचन्द के कथा साहित्य में चित्रित संस्कृति (साज-सज्जा के सन्दर्भ में विशेष)	–डॉ० पवनेश ठकुराठी	४६-५२
७.	मुझे चाँद चाहिए का शैल्पिक वैशिष्ट्य	–डॉ० कुलविंदर कौर	५३-५७
८.	छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा और चाँद पत्रिका	–श्वेता	५८-६३
९.	स्वातन्त्र्योत्तर राजनैतिक यथार्थ और रेणु का कथा-साहित्य	–डॉ० श्याम बाबू	६४-७३
१०.	कवि विजेन्द्र की लम्बी कविताओं में समाज का वर्गीय स्वरूप	–सुधीर कुमार ओझा	७४-८०
११.	प्रेमचन्द का राष्ट्रवाद : साम्प्रदायिकता, तुष्टिकरण और राष्ट्रीयता के प्रश्न	–ऋतु शर्मा	८१-८५
१२.	हिन्दी उपन्यासों में निहित आदिवासी	–गिरजेश कुमार	८६-९२

गोबिन्द प्रसाद : सौन्दर्य, प्रेम और वेदना के कवि

–डॉ० चन्द्रकान्त सिंह

कवि गोबिन्द प्रसाद जी सौन्दर्य के कवि हैं, उनकी कविताओं में रूप का अहरह संसार दिखता है, जिसे कवि ने जब-तब मुखर अभिव्यक्ति देनी चाही है। व्यक्तिगत प्रेम और उसकी विविध अर्थ छापों को रूप देते हुए कवि पार्थिव जगत् के सौन्दर्य को पूरी तदाकारिता के साथ रचते हैं। उनकी कविता को प्रेम की मूक बानी कहा जा सकता है, जहाँ अनुभव साहचर्य एवं व्यक्तिगत पीर को देखा जा सकता है। कवि गोबिन्द प्रसाद जब सौन्दर्य पर लिखते हैं तो जिजीविषा शक्ति, जीवटता, भूख एवं करुणा के दर्शन होते हैं। उनकी कविता में निराशा से आशा की तरफ जाने की तीव्र आकांक्षा है जो मद्धिम-मद्धिम आकार लेती है। उनके काव्यगत सौन्दर्य में मादकता और रूप की फिसलन नहीं है बल्कि जीवन को पूर्णाकार ग्रहण करते हुए उसका रूप आँकने की दृढ़ इच्छाशक्ति है। 'सुन्दरता के बारे में शीर्षक कविता में कवि गोबिन्द प्रसाद सुन्दरता के सन्दर्भ में अपने निजी विचारों को व्यक्त करते हैं। उनके अनुसार उदग्र प्यास, जीवन की अभीप्सा और संघर्ष ही सौन्दर्य है जिसे पूरेपन के साथ देखने की आवश्यकता है इस सन्दर्भ में दो-टूक विचार करते हुए वह कहते हैं–

सुन्दरता के बारे में मैं जो भी कहूँगा वह भूख में एक टुकड़ा होगा। सुन्दरता के बारे में मैं जो भी कहूँगा वह प्यास में एक बूँद होगी। सुन्दरता के बारे में मैं जो भी कहूँगा वह अँधेरे में उजाले की एक किरण होगी। सुन्दरता के बारे में मैं जो भी कहूँगा वह गायक के कण्ठ के करुणा में भीगा एक स्वर होगा।

कवि के लिए जीवन महत्त्वपूर्ण है, जीवन की हर घटना जिसमें सम्मोहन है और यथार्थ की गहरी टीस है, उन सभी को कवि ने कविता का विषय बनाया है। यहाँ कौशल-जैसी निरी कलाकारी नहीं है, बल्कि जीवन को समझने, भोक्ता बनकर उसमें सींझने का बोध है। गोबिन्द जी साहसी नाविक की तरह जीवन-रस में उतरते हैं और वेदना के जल से अपने अंतस का निर्माण करते हैं। एक तरह से कह सकते हैं कि आपकी कविताओं में प्रेम और सौन्दर्य को जानने की उद्दाम लालसा है और अकेले रहकर जीवन के तनाव को देखने और सहने का अपूर्व साहस भी। 'तुम्हारा आना' शीर्षक कविता जहाँ प्रतीक्षा की अविराम छाया है वहीं इस कविता में दीप, तारे, सूरज, खण्डहर जैसे शब्दों के द्वारा सौन्दर्य की विशिष्ट चित्रकारी है जिसे कवि ने शब्द-रूप दिया है। इस कविता में जीवन की जीवटता है जिसे किसी भी कीमत पर कवि नहीं खोना चाहता। यही नहीं यह कविता प्रेम को चखने और उसके रस से जीवनशक्ति प्राप्त करने की अनूठी तरकीब है। कवि प्रेयसी की प्रतीक्षा में लिखते हैं–

तुम्हारा आना, जैसे खुली आँखों का सपना।